



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 11 (नवम्बर, 2025)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

महिला नेतृत्व वाला उद्यम: भारत के आर्थिक परिवर्तन की नई दिशा

*अरुण गौतम, डॉ. आर. के. दोहरे, डॉ. एन. आर. मीना, डॉ. अंजना राय एवं अनिल प्रताप सिंह

कृषि विस्तार शिक्षा विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ.प्र.), भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: arungautam3121@gmail.com

आज का भारत एक तेज़ी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है, जहाँ महिलाएँ सिर्फ विकास की सहभागी नहीं बल्कि विकास की गति बन चुकी हैं। Women-led Enterprises (WLEs) अब राष्ट्र निर्माण के केंद्रीय स्तंभ के रूप में उभर रहे हैं। पिछले एक दशक में महिलाओं का आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी सशक्तीकरण बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप महिला उद्यमिता में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है। रिपोर्ट्स दर्शाती हैं कि महिला-स्वामित्व वाले MSMEs 2010-11 की तुलना में 2023-24 तक लगभग दोगुने हो गए, जिसने लाखों रोजगार सृजित किए और भारत की GDP में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत के आर्थिक परिवर्तन में महिलाएँ किस प्रकार योगदान दे रही हैं?

1. मज़बूत Labour Force Participation

- महिला श्रमबल भागीदारी दर 2017-18 में 22% से बढ़कर 2023-24 में 40.3% हो गई।
- ग्रामीण महिलाओं के रोजगार में 96%, जबकि शहरी महिलाओं में 43% वृद्धि दर्ज की गई।
- उच्चशिक्षित महिलाओं (Graduate & PG) की Work Participation भी लगातार बढ़ रही है।

2. Formal Economy में बढ़ती उपस्थिति

- 1.56 करोड़ महिलाएँ औपचारिक क्षेत्रों में शामिल हुईं।
- 16.69 करोड़ महिला Unorganized workers ने ई-श्रवम पर पंजीकरण कराया और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लिया।

3. Women-led MSMEs का विस्तार

- महिला-नेतृत्व वाले MSMEs की संख्या 1 करोड़ से बढ़कर 1.92 करोड़ पहुँच गई।
- 2021-2023 के बीच 89 लाख अतिरिक्त महिलाओं को रोजगार मिला।

4. Financial Inclusion में सुधार

- PMJDY, PM-SVANidhi, SHGs, और Digital Literacy Program ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया।
- MUDRA ऋणों में 68% लाभार्थी महिलाएँ हैं।

महिला-नेतृत्व विकास क्यों महत्वपूर्ण है?

1. Gender Equality की दिशा में बड़ा कदम

भारत अभी भी 2025 के Global Gender Gap Report में 131/148 स्थान पर है। महिला नेतृत्व इस अंतर को कम कर सकता है।

2. Economic Growth का मुख्य चालक

अध्ययन बताते हैं कि यदि महिलाओं की कार्यभागीदारी बढ़े तो भारत की GDP 30% तक बढ़ सकती है।

3. Inclusive Development

महिलाएँ बेहतर नवाचार, मजबूत निर्णय क्षमता और सामाजिक मूल्यों का समावेश लाती हैं। उनके नेतृत्व से:

- Productivity बढ़ती है
- सामाजिक विकास तेज़ होता है
- समान अवसरों का वातावरण बनता है

महिला नेतृत्व विकास के समक्ष चुनौतियाँ

1. सामाजिक और सुरक्षा संबंधित बाधाएँ

- Patriarchy महिलाओं के निर्णय लेने की क्षमता को सीमित करती है।
- Domestic responsibilities & early marriage उनके करियर को प्रभावित करते हैं।
- भारत में प्रतिदिन महिलाओं के विरुद्ध औसतन 51 अपराध दर्ज होते हैं, जो mobility को कम करते हैं।

2. शिक्षा और कौशल का अंतर

- महिला साक्षरता दर अभी भी 65.4% (2011 Census) है।
- Digital divide आज भी एक बड़ी चुनौती है।

3. नेतृत्व पदों में कम प्रतिनिधित्व

- Corporate boards, political leadership और administration में महिलाएँ अभी भी कम हिस्सेदारी रखती हैं।

4. Wage Gap & Informal Sector Dependency

- महिलाएँ अक्सर कम वेतन और अनौपचारिक सेक्टर में काम करने के लिए मजबूर हैं।

महिलाओं को आर्थिक मुख्यधारा में लाने के लिए भारत द्वारा अपनाए जा सकने वाले उपाय

1. Care Economy को मजबूत बनाना

- Crèche, day-care centres, workplace childcare support अनिवार्य बनाना।
- महिलाएँ घर-काम के दोहरे बोझ से मुक्त होकर करियर पर ध्यान दे सकें।

2. Digital & Physical Infrastructure में सुधार

- Rural internet, sanitation, housing, transport में gender-responsive budgeting।
- Digital Saksharta & PMGDISHA जैसे कार्यक्रमों को तेज़ी से लागू करना।

3. Governance & Leadership Representation बढ़ाना

- Panchayat to Parliament – सभी स्तरों पर women reservation को बढ़ावा देना।
- Corporate boards में महिला कोटा लागू करना।

4. Skill Development & Entrepreneurship Support

- SHGs, EDPs, और start-up mentorship का विस्तार।
- Female-friendly work environment और zero tolerance policies अनिवार्य करना।

भारत में महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना: शीर्ष 6 सरकारी ऋण योजनाएँ

1. अन्नपूर्णा योजना

- Food processing और catering व्यवसाय शुरू करने हेतु
- ₹50,000 तक का ऋण (36 किस्तों में भुगतान)

2. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY)

- ₹10 लाख तक का collateral-free loan
- 68% लाभार्थी महिलाएँ

3. Stand Up India

- SC/ST और महिलाओं के लिए
- ₹10 लाख-₹1 करोड़ तक ऋण
- Manufacturing, services, trading, agri-allied sectors हेतु

4. स्त्री शक्ति योजना

- EDP training अनिवार्य
- ₹2 लाख से अधिक के ऋण पर 0.05% कम ब्याज

5. सेंट कल्याणी योजना

- MSME सेक्टर में महिलाओं के लिए
- नई और existing दोनों units को वित्तीय सहायता

6. उद्योगिनी योजना

- ₹1 लाख तक का कम ब्याज ऋण
- वार्षिक आय ₹40,000 से कम वाली महिलाओं के लिए विशेष रूप से सहायक

भारत की शीर्ष 15 महिला उद्यमियों की सूची

नाम	कंपनी/प्लेटफॉर्म	उद्योग
फाल्गुनी नायर	Nykaa	Beauty & E-commerce
गज़ल अलघ	Mamaearth	Skin & Personal Care
उपासना टाकू	MobiKwik	Fintech
किरण मजूमदार-शॉ	Biocon	Biotechnology
विनीता सिंह	SUGAR Cosmetics	Beauty
वाणी कोला	Kalaari Capital	Venture Capital
अदिति गुप्ता	Menstrupedia	Health & Education
राधिका घई	ShopClues	E-commerce
श्रद्धा शर्मा	YourStory	Media
सुचित्रा मुखर्जी	LimeRoad	Fashion Retail
नमिता थापर	Emcure Pharma	Pharmaceuticals
नेहा सिंह	Tracxn	Business Analytics
मंजू धिर	Ecom Express	Logistics
क्षमा देवराज	Lead School	EdTech
निधि हांडा	Kinara Capital	Financial Services

ये महिलाएँ भारत की नई उद्यमशीलता संस्कृति की प्रेरक शक्ति बन चुकी हैं।

निष्कर्ष

महिला-नेतृत्व वाले उद्यम न सिर्फ़ आर्थिक विकास का आधार हैं बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा भी तय करते हैं। सरकारी योजनाओं, डिजिटल सशक्तीकरण और बढ़ती सामाजिक जागरूकता के कारण अब भारत की महिलाएँ उद्योग, कृषि, विज्ञान, वित्त, स्टार्टअप और सेवाओं सभी क्षेत्रों में अपनी मजबूत पहचान बना रही हैं। एक आत्मनिर्भर, समावेशी और विकसित भारत के निर्माण में महिला उद्यमी केंद्रीय भूमिका निभा रही हैं। उनका नेतृत्व न सिर्फ़ वर्तमान को बदल रहा है, बल्कि भविष्य की एक समान और समृद्ध अर्थव्यवस्था की नींव भी रख रहा है।